Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

Notes for
B.A-part-III,
paper-V

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य

बहमनी साम्राज्य :- उत्तरी राज्य :- 14वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया उत्तरी भारत से ही आरंभ हुई। दिल्ली के सुल्तानों की निर्बलता एवं साम्राज्य में विद्यमान अराजकता की स्थिति का लाभ उठाकर अनेक महत्वाकांक्षी सरदारो ने स्वतंत्र राज्यो की स्थापना कर ली।

मुहम्मद बिन-तुगलक और उसके पश्चात् अनेक राज्य दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र हो गए। इन राज्यों में प्रमुख है— कश्मीर, जौनपुर, मालवा, राजपुताना, गुजरात, उड़िसा, बंगाल और कामरुप के राज्य है।

उत्तरी भारत की ही तरह दक्षिणी भारत में भी 14-15वीं शताब्दियों में अनेक स्वतंत्र राज्यो का उदय हुआ। इनमें सबसे अधिक शक्तिशाली बहमनी और विजय नगर के राज्य थे। इन राज्यो ने धीरे-धीरे अपनी शक्ति का विस्तार कर दो शक्तिशाली साम्राज्यो की स्थापना की।

बहमनी पर मुसलमानों का शासन था। विजय नगर पर हिन्दुओं का शासन हुआ। बहमनी राज्य के अवशेषों पर पाँच इस्लामी राज्यों — बीजापुर, अहमदनगर, बरार, गोलकुंडा और बीदर का उदय हुआ। इन राज्यों ने प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित किए।

→

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य

→ **बहमनी साम्राज्य :-** मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय में दक्षिण भारत के अधिकतर भाग पर दिल्ली सल्तनत का अधिपत्य कायम हो गया था, परंतु मुहम्मद तुगलक की नीतियों ने विध्वंसकारी तत्वों को भी बढ़ावा दिया। उसने सादी नामक पदाधिकारियों को राजस्व वसूली एवं सैनिक अधिकार भी प्रदान किए थे। फलतः इन्हीं के हाथों में सारी सत्ता केन्द्रित हो गई थी। मुहम्मद तुगलक के शासन के उत्तरार्द्ध में जब सर्वत्र विद्रोह होने लगे, तब इन सादियों ने भी अपनी शक्ति संयोजित कर विद्रोह कर दिया। इन विद्रोहियों का नेतृत्व इस्माइल मख और हसन गंगू (जफर खाँ) ने किया। दौलताबाद पर विद्रोहियों ने अधिकार कर लिया। 1346 ई० में जनता और इस्माइल मख के अनुरोध पर हसन गंगू (जफर खाँ) ने अलाउद्दीन हसन बहमनशाह की उपाधि धारण की एवं बहमनी के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

अलाउद्दीन हसन बहमनशाह :- बहमनशाह, बहमनी-राज्य का वास्तविक संस्थापक था। अपनी सैनिक एवं प्रशासनिक क्षमता के आधार पर उसने नवगठित राज्य की स्थिति सुदृढ़ की। तुगलकों की सेना को परास्त कर उसने कंधार, कोट्टगिरि, कल्याण एवं बीदर पर भी अपना अधिपत्य स्थापित किया। उसने गुलबर्गा के विद्रोह का दमन किया तथा दाबुल के बंदरगाह को भी जीता। उसकी सैनिक विजयों ने बहमनी राज्य की स्थिति सुदृढ़ कर दी। उसने अपनी प्रजा के साथ उदारतापूर्वक व्यवहार किया। हिन्दुओं पर से जजिया वापस ले लिया गया।

→

→ मुहम्मद शाह I → अलाउद्दीन के पश्चात् उसका पुत्र मुहम्मदशाह प्रथम 1358 ई० में सुल्तान बना। अपने पिता की तरह वह भी एक योग्य शासक सिद्ध हुआ। उसके शासन का अधिकांश समय तेलंगाना के शासक कपाय नायक एवं उसके पुत्र विनायक देव तथा विजयनगर साम्राज्य से युद्ध करने में व्यतीत हुआ। तेलंगाना पर आक्रमण कर उसने गोलकुण्डा छीन लिया। विजयनगर के राजा बुक्का को भी उसने परास्त किया। युद्धों के अतिरिक्त मुहम्मद ने प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपनी क्षमता प्रदर्शित की। सम्पूर्ण बहमनी राज्य चार तराफों या अतराफों अलग सूबों में विभक्त कर दिया गया। ये सूबा – दौलताबाद, बरार, बीदर, और गुलबर्गा थे। उनका शासन योग्य व्यक्तियों को सौंपा गया। सैन्य व्यवस्था में भी आवश्यक परिवर्तन किए गए। इसी समय बारूद का प्रयोग आरंभ हुआ, जिसने बहमनियों की सैनिक क्षमता और अधिक बढ़ा दी।

ताजुद्दीन फीरोज :– 1375 ई० में मुहम्मद I की मृत्यु से 1397 ई० में ताजुद्दीन फीरोज के गद्दी पर बैठने के बीच चार सुल्तानों ने शासन किया। इस अवधि में राज्य की शक्ति निर्बल पड़ने लगी। दक्षिण में विदेशियों (अफाकियो) और उत्तर से दक्षिणी भारत आनेवाले दक्खिनियों (हबीबों) के मध्य अपना-अपना प्रभाव जमाने के लिए संघर्ष चलता रहा। इन संघर्षों ने राज्य की स्थिति कमजोर कर दी थी। गद्दी पर बैठते ही ताजुद्दीन ने इस संघर्ष से उबरने का प्रयास किया। अफाकियो और हबीबों की दलगत राजनीति से ऊबकर उसने हिन्दुओं को प्रश्रय दिया/देना आरंभ किया। वह एक उदार शासक था। कला एवं साहित्य को —

उसने संरक्षण दिया। उसे विजयनगर राज्य से संघर्ष करना पड़ा। तेलंगाना पर भी उसने आक्रमण किया। राजनीतिक षड्यंत्रों एवं कुचक्रों के कारण उसके अंतिम दिन कष्ट में व्यतीत हुए।

अहमदशाह I :- 1422 ई० में अहमदशाह प्रथम बहमनी-साम्राज्य का सुल्तान बना। उसने सबसे पहले साम्राज्य की राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दी। बीदर का नाम बदलकर मुहम्मदाबाद रख दिया गया। इसके समय में दरबार में अफाकियों का प्रभाव बढ़ने लगा। फलतः दलगत राजनीति पुनः उभर कर सामने आ गई। विजयनगर के साथ इसे भी युद्ध करना पड़ा। उसने माहूर के राजा के विद्रोह को शांत किया तथा मालवा की सेना को भी पराजित किया। गुजरात से भी उसका युद्ध हुआ, परंतु अंत में उसे गुजरात से संधि करनी पड़ी।

अलाउद्दीन अहमदशाह II :- 1436 ई० में अलाउद्दीन अहमदशाह द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसे अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। इस समय तक दरबार की दलगत राजनीति चरम सीमा पर पहुँच गई थी। तेलंगाना, गुजरात, खानदेश, विजयनगर, मालवा और उड़ीसा के राजा बहमनी पर आक्रमण करने की योजना बना रहे थे। सुल्तान को इनसे निर्णायक युद्ध करने पड़े। नलगोंडा के विद्रोह का दमन सुल्तान ने महमूद गवाँ के सहयोग से किया। 1358 ई० में उसकी अकाल मृत्यु हो गई।

शम्सुद्दीन मुहम्मदशाह III :- अहमदशाह द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् राज्य की स्थिति पुनः बिगड़ गई। उसकी —

(5)

→ मृत्यु के पश्चात् क्रमशः हुमायुँ और अल्पवयस्क निजामुद्दीन शासक बने। इस स्थिति का लाभ उठाकर उड़ीसा और मालवा के सुल्तानों ने राज्य पर आक्रमण कर दिया। उड़ीसा की सेना पराजित कर दी गई। प्रशासनिक परिषद के प्रमुख सदस्य महमूद गवाँ ने गुजरात के शासक की सहायता से मालवा का आक्रमण विफल कर दिया। परंतु इसके शीघ्र पश्चात् ही निजामुद्दीन की मृत्यु हो गई। फलतः उसका छोटा भाई 1463 ई० में शम्सुद्दीन मुहम्मदशाह के नाम से सुल्तान बना। वह भी नाबालिग था।

महमूद गाँवा को वजीर बनाया गया और उसे "ख्वाजा जहाँ" की उपाधि दी गई। महमूद गाँवा ने अपनी प्रतिभा के बल पर बहमनी राज्य की शक्ति और प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिया। उसने बहमनी साम्राज्य का प्रभाव कोरोमंडल तट से अरब महासागर तक स्थापित कर दिया। उसने कोंकड़ के हिन्दुओं विरोधियों का दमन किया, संगमेश्वर के राजा को अपनी अधीनता स्वीकार करने को बाध्य किया। मालवा को पराजित किया, राजमुंद्री पर अधिकार किया तथा उड़ीसा के शासकों से अनवरत युद्ध किया। उसने आंतरिक स्थिति पर भी काबू पाई। दरबार की दलबंदी पर अंकुश लगाया तथा प्रशासनिक सुधार किए। उसके बढ़ते प्रभाव से उसके विरोधी आशंकित हो उठे। उन लोगों ने सुल्तान को अपने प्रभाव में लेकर उसे मृत्युदण्ड दिलवा दिया। महमूद गाँवा की मृत्यु के एक वर्ष के अन्दर ही 1482 ई० में सुल्तान की भी मृत्यु हो गई। बहमनी राज्य के विस्तार में महमूद गाँवा का बहुमूल्य योगदान है। उसने न सिर्फ राज्य की सीमा का विस्तार

किया, बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था भी सुदृढ़ की। समस्त राज्य, नवविजित क्षेत्रों के साथ आठ प्रांतों में विभक्त कर दिया गया। प्रांतपतियों के सैनिक अधिकारों में कटौती की गई। जागीरदारों पर भी अंकुश लगाया गया।

महमूद गवाँ ने सांस्कृतिक विकास को भी प्रोत्साहन दिया। उसने शिक्षा के विकास के लिए बीदर में एक महाविद्यालय की स्थापना करवायी। उसने ईरान, इराक, मिस्र और तुर्की के सुल्तानों के साथ राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंध भी बढ़ाए। मुहम्मदशाह के समय में महमूद गवाँ ही वास्तविक शासक बना रहा।

<u>बहमनी राज्य का पतन</u> :- मुहम्मदशाह के उत्तराधिकारी निर्बल थे। इस विशाल साम्राज्य की सुरक्षा नहीं कर सके। मुहम्मदशाह के बाद क्रमशः महमूदशाह एवं कलीमुल्लाह शासक बने। अब प्रांतीय अधिकारी स्वतंत्र होने का प्रयास करने लगे। कलीमुल्लाह इन प्रांतीय अधिकारियों को अपने अधीन नहीं रख सका। राज्य पर वस्तुतः बीदर के कोतवाल का अधिपत्य स्थापित हो गया। 1526 ई० में नाममात्र के सुल्तान की मृत्यु के साथ ही बहमनी साम्राज्य भी समाप्त हो गया। इसके अवशेषों पर दक्षिण में पाँच स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। ये राज्य निम्नलिखित थे —

<u>बीजापुर</u> — बीजापुर के आदिलशाही राज्य की स्थापना 1489 ई० में यूसुफ आदिलशाह ने की। इस वंश के एक शासक इब्राहीम आदिल शाह ने बीदर को भी अपने राज्य में मिला लिया। शाहजहाँ ने इस राज्य को जीतने

→

→ का प्रयास किया, परंतु अपने प्रयास में वह विफल रहा। 1689 ई० में औरंगजेब ने इस पर अधिकार कर लिया।

अहमदनगर:— मलिक अहमद ने 1490 ई० में अहमदनगर में निजामशाही नामक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। अहमदनगर को विजयनगर एवं मुगल शासकों से संघर्ष करना पड़ा, जिससे उसकी शक्ति नष्ट हो गई। 1600 ई० में अकबर ने इसपर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। बाद में शाहजहाँ ने इसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

बरार:— बरार में भी 1490 ई० में ही फतहउल्ला खाँ इमादउलमुल्क ने बरारी इमादशाही वंश की स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। यह राज्य अधिक समय तक अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए नहीं रख सका। 1574 ई० में इस पर अहमदनगर ने अपना अधिपत्य स्थापित कर लिया।

गोलकुण्डा— गोलकुंडा में जिस राजवंश की स्थापना हुई, वह कुतुबशाही राज्य के नाम से विख्यात है। इसका संस्थापक कुतुबशाह था। इसे भी औरंगजेब ने मुगल-साम्राज्य में मिला लिया।

बीदर— बीदर में, बहमनी साम्राज्य के शेष भागों पर अधिकार कर बरीद ने, बरीदशाही राज्य की स्थापना की। बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह ने इसे अपने राज्य में मिला लिया। इन सारे राज्यों में आपसी प्रतिद्वंद्विता थी। इन्हें विजयनगर राज्य और मुगलों से भी संघर्ष करना पड़ा। मुगलों ने इन्हें अपने साम्राज्य में मिलाकर इनका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त कर दिया।